CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

कबीर का काव्य शिल्प

धूड़ाराम
सहायक आचार्य हिंदी विभाग
श्री श्रध्दानाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय टोडी, गुढागोड़जी, जिला झुंझुनू राजस्थान
Email- dhooraram.kolsiya@gmail.com, Mob.-9887861248

First draft received: 15.04.2024, Reviewed: 25.04.2024, Final proof received: 27.04.2024, Accepted: 23.06.2024

सार संक्षेप

कबीर का काव्य शिल्प- बेजोड़ है /तार्किक क्षेत्र में अत्यंत शुष्क तीक्ष्ण ,और हृदयहीन प्रतीत होने वाले कबीर भक्ति की भावधारा में बहते समय सबसे आगे दिखाई देते हैं /अपनी निरक्षरता की खुल्लेआम घोषणा करके भी जब वे आवेश में आते हैं; तब रूपको, प्रतीकों, अलंकारों की ऐसी झड़ी लगा देते हैं; मानो वे सारे काव्यशास्त्रों में पारंगत हो/ ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व वाले कबीर का काव्य शिल्प काव्य रसिको एवं पाठकों के लिए अनुकरणीय है /

मुख्य शब्द : *ब्रह्म, जीव, जगत, पिंड, इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, मूलाधार चक्र, मानसरोवर आदि.*

प्रस्तावना

नामदेव द्वारा प्रवर्तित हिंदी संत काव्य परंपरा को सुप्रतिष्ठित एवं सुनियोजित करने का श्रेय कबीर दास को ही दिया जाता है कबीर | कबीर पंथियों | जीवन चरित संबंधी प्रामाणिक जानकारी का अभाव है के एक पद के आधार पर उनका जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा चंद्रवार संवत्1455 माना जाता है प्रस |िद्ध आलोचक श्री रामकुमार वर्मा ने भी कबीरपंथियों की हाँ में हाँ मिलाते हुए कबीर का जन्म संवत् 1455 में काशी में होना स्वीकार किया है, यथा----

चौदह सौ पचपन साल गये, चंद्रवार इक ठाठ ठए |

जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए ||

कबीर की मृत्यु को लेकर भी कबीर ग्रंथावली में एक पद मिलता है ; जिसके अनुसार कबीर का निधन माघ शुक्ला एकादशी संवत्1575 को माना जाता है, यथा-

संवत् पंद्रह सौ पछन्त्तरा, किए मगहर को गौन |

माघ सुदी एकादशी, रल्यो पौन में पौन||

कबीर के दीक्षा गुरु रामानंद थे बचपन से ही उन पर हिंदू |धर्म के संस्कारों का प्रभाव था काशी में हम "– कबीर ने स्वयं कहा है कि | " | रामानंद चिताये ; प्रगट भये हैआगे चलकर कबीर राम नाम का सहारा पाकर संतमत के अनुयायी बने जहाँ ; कबीर के राम रामानंद के राम से भिन्न है रामानंद के राम राजा दशरथ के पुत्र और विष्ण |ु के अवतार है तो कबीर के राम निराकार है, अविनाशी हैं--

कह कबीर भ्रम नाशी " ,

राम मिले अविनाशी "||

निर्गुण निराकार के पार जो परब्रह्म है ,उसी को कबीर ने राम कहा है | ,जिसे कबीर ने समरथ ; निर्मूलक हैं , कबीर के राम गुणातीत हैं उसे न ,न माथा ,उसके न मुँह है | सतगुरु कहा है,पुरुष आदि ,साहेब वह अनुप तत्व पुष्पवास से भी | न कुरूप ,रूपवान कहा जा सकता है सूक्ष्म है।

कबीर का काव्य शिल्प

कबीर बिना किसी लागखर -लपेट के खरी-ी कहने वाले संत स्वभाव के मौलिक विचारक हैं कट करते हैं जब वे अपने भाव एवं विचार प्र | तब उनकी नजर कविता के स्वरूप पर नहीं रहती बल्कि वे तो सद उपदेश द्वारा लोगों को सीधे रास्ते पर लाना चाहते हैं जिस रास्ते पर हिं, छूत -छुआ ,नीच -चलते हुए लोगों के मन में ऊँचदू मुस्लिम का - भेदभाव न हो। कबीर जब अपने भावों को वाणी देते हैं तब उनका श्य काव्य की प्रस्तुति नहीं बल्कि अपने अनुभव जनित ज्ञान को उद्दे सदुपदेश रूप में लोगों तक पहँचाना ही रहता है

कबीर अनपढ़ थे उन्होंने अपने निरक्षर होने की उदघोषणा करते हुए कहा है कि मसि -कागद छुओ नहींऐसी स्थिति 'कलम गही नहीं हाथ , यदि काव्य की | में उनके शिष्यों ने उनकी वाणी को संकलित किया वक्रोक्ति आदि काव्य शास्त्रीय सिद्धांतों के ,ध्वनि ,रस ,समीक्षा अलंकार तो निश्चित ही कबीर का साहित्य में ऊँचा स्थान ;आधार पर की जाए लेकिन य | नहीं होगादि भावों की श्रेष्ठता मौलिकता और उनकी सहज सरल अभिव्यक्ति को परखा जाए तो कबीर श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी में शामिल होंगे ।

कबीर के काव्य का शिल्प अनगढ़ है और यही विशेषता उन्हें जनमानस का कवि बनाती है उनके काव्य का उद्देश्य समाज को एकजुट करना है | सत्य से साक्षात्कार कराना है ल्प को जानने के कबीर के काव्य शि | प्रतीकों को ध्यान में रखते हुए निम्न बिंदुओं ,बिंब ,लिए उनकी भाषा - पर विचार किया जाना चाहिए

कबीर के काव्य की भाषा

कबीर भाषा के नहीं बल्कि भावों के कवि हैं भाषा उनके भावों के | उनका का | आगे सरपट दौड़ती हैव्य भाषा के परिमार्जन के लिए नहीं है बल्कि भाषा उनके भावों एवं काव्य की सहचरी है कवि यायावर | वे जिस क्षेत्र में गए वहां की स्थानीय बोली एवं | प्रवृत्ति के संत थे कबीर की भाषा | भाषा के शब्दों का प्रयोग अपने उपदेशों में करते रहे को आचार्य रामचंद्र शुक्ल न े सधुक्कडी कहा है में कबीर की भाषा | गुजराती के शब्दों नाथों और सिद्धों के ,खड़ी बोली अवधी ब्रज पारिभाषिक शब्दों का घालमेल है इसलिए उनके काव्य की भाषा को उनकी भाषा आम | सधुक्कडी या खिचड़ी भाषा कहा जा सकता है | आदमी के व्यवहार की है भक्त कवियों जैसी नहीं है

उलटबाँसियो के लिए कबीर को साहित्य जगत में विशेष तौर से याद किया जाता है कहीं कबीर की भाषा कर्कश -उलट बाँसियो में कहीं | अवश्यक हो गई है लेकिन अलंकार विहीन एवं कर्कश वाणी उनके उलट बाँसियो के माध्यम से वे जो | काव्य का एक अतिरिक्त गुण है खरी सुनाते है-खरी ं ना संभव उसे कोमलकांत पदावली में कहा जा ; कबीर के अनुभव लोक जीवन से सीधे जुड़े | तो कठिन अवश्य है ,नहीं कबीर | संस्कार लोक जीवन का दिया हुआ है -उनका भाषा | हुए हैं इसलिए कबीर ने भाषा को उसी रूप में प्रयोग , लिखे नहीं थे-पढ़े किया है जिस रूप में उसे उसने ग्रहण किया है कबीर की निगाह तो | इसलिए वे समाज के हरेक व्यक्ति की , ज सुधार पर टिकी थीसमा कबीर ने वही किया जो |समझ में आने वाले शब्दों का प्रयोग करते थे उनकी कथनी और करनी में अंतर |लोक मंगल के लिए आवश्यक था |यही बात उनकी भाषा पर भी लागू होती है|नहीं था

कबीर के सामने भाषा के चमत्कार या वैचित्रय प्रदर्शन का तो सवाल ही नहीं थावे सहज है ;उनके काव्य में जिन काव्यांगो का समावेश है | | कबीर ने शायद ही किसी ऐसे शब्द का प्रयोग किया हो जिसकी समाज उनकी भाषा में दुरुहता और प्रतीकात्मकता | में स्वीकार्यता न हो अवश्य है जो कि पारिभाषिक एवं आध्यात्मिक संकेतों के कारण आई हैकबीर ने भाषा को एक प्रकार से बहता नीर बनाया है उन्होंने काव्य | में संस्कृत निष्ठता के एकाधिकार को तोड़कर उसे सार्वजनीन बनाया है |और आम आदमी से जोड़ा

कबीर भले ही अनपढ़ हो लेकिन उन्हें शब्दों की गंभीरताउ ,नका प्रभाव उनकी मारक क्षमता का भली, व्यंग्यार्थ ,-भाति ज्ञान था | कबीर की भाषायी क्षमता | भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार था वाणी का " को परख कर डॉक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तो उन्हें कबीर के काव्य में भाषाई विविधता मिलती है | कहा है "डिक्टेटर जब वे भक्|तों को प्रेम पूर्वक समझाते हैं तब उनकी भाषा सहज सरल हो जाती है लेकिन जब वे मुल्लापाखंडी पुजारियों को समझाने ,पण्डे , लगते हैं तब उनकी भाषा में अक्खडपन्न और तीखापन आ ही जाता -- है। यथा

माया दीपक नर पतँग| भ्रमि माँहि परंत– भ्रमि,

कोई एक गुरु ज्ञान ते, उबरे साधु संत।।।

कांकर| पांथर जोरि कै मस्जिद लई चुनाय -

ताँ चढ़ि मुल्ला बांग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय।।।

कबीर की भाषा संवाद की भाषा होने के साथसाथ अर्थ की दृष्टि से - गंभीर ह ैकबीर के अंदर बैठा संत चित्त भावों की गंभीरता एवं | कबीर ने | उनकी अभिव्यक्ति के लिए जरूरी शब्दों को पहचानता है ,आँधी सूर्य. कमल ,कुण्डलिनी,जागरण ,सिंह, सियार, मच्छली, समुद्र इनके अर्थ ठीक से ;गगन आदि शब्दों को नए अर्थों में ग्रहण किया है समझने के लिए कबीर के दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों को जान लेना चाहिए |

कबीर साहित्य एवं प्रतीक योजना

कबीर के काव्य में प्रतीकों की भरमार है -उन्होंने अगोचर आत्मा | माया संबंधी अनुभूतियों का बखान करते समय , जीव ,परमात्मा कबीर आत्मा की शुद् | प्रतीकों का ही सहारा लिया हैधता और परमात्मा से साक्षात्कार की बात कहते हैं इसके लिए वे साधना को | साधक को जब परमात्मा से साक्षात्कार का | आवश्यक मानते हैं ; तब उसे असीम आनंद की अनुभूति होती है ; अवसर मिलता है लेकिन अलौकिक अनुभूति की लौकिक अभिव्यक्ति संभव नहीं हो पाती ऐसी स्थिति | है में साधक को जब परमात्मा से साक्षात्कार का अवसर मिलता है लेकिन | तबउसे असीम आनंद की अनुभूति होती है; अलौकिक अनुभूति की लौकिक अभिव्यक्ति संभव नहीं हो पाती है ऐसी स्थिति में साधक प्रतीकों के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को मूर्त | प | रूप देने का प्रयास करता है्रतीक में भावना जागृत करने की क्षमता होती है अपने भावो एवं अनुभव को मूर्त रूप देने के अलावा भक्तों एवं संतों में कौतुहल वृत्ति बनाए रखने के लिए भी कबीर ने प्रतीकों का सहारा लिया है अपनी रहस्यात्मक अनुभूति को भी कबीर | ने बिंबो और प्रतीकों के जरिए ही प्रकट किया है ---

गगन की गुफा तहाँ गैब का चाँदना,

उदय औ अस्त का नाव नाहीं|

दिवस औ रैन तहाँ, नेक नहि पाइये,

प्रेम औ परकाश के सिंध माहीं |

सदा आनंद दुखदुन्दु व्यापै नहीं -

पूरनानंद भरपूर देखा |

भरम औ भ्रांति तहाँ नेक आवै नही,

कहै कबीर रस एक पेरवा।।।

मानवीय संबंधों के माध्यम से कबीर ने परम तत्व के बारे में समझाने का प्रयास प्रतीकों के माध्यम से किया है - इसके लिए कवि ने पिता| पत्नी के आपसी रिश्तों को आधार-पति ,सेवक -स्वामी, पुत्र बनाया है| यथा----

दुलहनि गावहु मंगलाचार

हम घरि आये हो राजाराम भरतार |

तन रत करि मैं मन रत करि हूँ पंच तत बराती |

राँमदेव मोरै पाहुनै आये मैं जोबन मैं माती '

सरीर सरोवर बेदी करिहूँ ब्रह्मा वेद उचार |

राँमदेव संगि भाँवरी लैहूँ धनि-धनि भाग हमार"

सुर तेतीसूँ कौतिग आये मुनिवर सहस्र अठयासी |

कहैं कबीर हँम ब्याहिं चले है,पुरिष एक अबिनासी ||

कबीर ने परम तत्व के लिए अनेक प्रतीकों अगम ,असीम, अगोचर , कवि ने ये प्रतीक लौकिक जीवन | अरूप आदि का प्रयोग किया है ईश्वर के लिए इन्होंने | सूफियों के दर्शन से ग्रहण किए हैं ,सिद्धों ,नाथो जगदीश आदि ,गुसाईं ,साहब खुदा,पति, साँईं हरि,पिव ,भरतार ,राम प्रतीकात्मक शब्दों को अपनाया है जीव और जगत पर माया के | प्रभाव को समझाने के लिए कबीर ने रमैनी और सबदों में माया का जो दृष्टि के सामने आते ही ; इतना वीभत्स और भीषण चित्र खींचा है कबीर साहित्य को | हृदय को न जाने कितनी भावनाओं से भर देता है होत पढ़ने से ज्ञात ा है ;कबीर माया को उस हीन दृष्टि से देखते हैं -- कबीर | जिस दृष्टि से एक साधु या महात्मा किसी वैश्या को देखता है के अनुसार यही माया आत्मा और परमात्मा की संधि में बाधा डालने

| वाली है कबीर ने महसूस किया कि यह संसार सत्पुरुष की आराधना के लिए है एक निरंजन ने | बार विश्व का सृजन कर दिया मानो उसने ; लेकिन माया ने उस ; सत्पुरुष की उपासना के साधन की सृष्टि कर दी है ----यथा | सा डाल दिया है -पर पाप का पर्दा

कबीर माया बेसवा दोनों की इक जाति |

आवत कौं आदर करैबा जाति न पूछैं,ती ||

कबीर माया मोहिनी| मोहे जान सुजान ,

भागे हूँ छूटे नही ,मरि मरि मारे बान ||

कबीर की उलटबाँसिया

कबीर भक्ति कालीन संत काव्य धारा के शिखर पुरुष हैं वे | इनकी साधना पद्धति योग | समाज सुधारक एवं कवि हैं, संतमार्ग से शुरू होती हैभक्ति मार्ग पर समाप्त :ज्ञान मार्ग पर चलती हुई अंतत , पढे सौ 'ढाई आखर प्रेम का'– तभी तो कबीर ने कहा है कि | होती है ' | पंडित होयकबीर के साहित्य में उलटबाँसियों का विशेष महत्व है जो कि नाथ परंपरा की हठयोग साधना एवं संधा भाषा का ही विकसित रूप है नाथों में एक विशेष प्रकार की साधना पद्धति पर | जिसके अनुसार योग ; जिसे हठयोग कहा जाता है ;बल दिया गया है मूल स्वभाव को पलट दिया जाता की साधना के माध्यम से इंद्रियों के अपनी इन्हीं अंतःसाधनात्मक अनुभूतियों को कबीर ने एक विशेष | है प्रकार की प्रतीकात्मक भाषा में व्यक्त किया है जिसे संधा भाषा कहते हैं जो ;इस भाषा में साधारण भाषा के विपरीत उक्तियाँ मिलती हैं | – जैसे प्रतीकार्थ खुलने पर ही स्पष्ट होती हैं

'| नैया विच नदिया डूबती जाए'

यहां प्रतीकों का अर्थ स्पष्ट होते ही इस अबूझ सी लगने वाली पहेली का अर्थ स्पष्ट हो जाता है ज्ञान की -सरल शब्दों में इसका तात्पर्य है | प्राप्ति होने पर एन्द्रिय सुखों की तीव्र वासना नष्ट हो जाती है इसी तरह – कि कबीर ने कहा है

समंदर लगी आगि| नदियाँ जलि कोयला भई,

देखि कबीरा जागी ,मंछी रूषा चढि गई||

उपर्युक्त उलटबांसी में समंदर प्रतीक शब्द है जिसका अर्थ मूलाधार , यहाँ | ज्ञान प्राप्ति की आग लगी हुई है' उसमे | चक्र में स्थित कुंड से है उस आग से इंगला और पिंगला नाड्यिाँ – नदियाँ जलने का अर्थ हुआ कुण्डलिनी रूपी मछली सुषुम्ना नाडी के माध | भस्म हो गई है्यम से सहस्रसार चक्र रूपी वृक्ष पर चढ़ गई हैं |

कबीर का उल्टाबाँसियो से संबंधित काव्य सीमित है जिसमें , लटवाँसियों में अप्रतीत्व व कबीर की उ | साहित्यिक कमजोर भी हैं फिर भी कबीर की उलटवाँसिया साहित्य की | क्लिष्टत्व दोष भी है दार्शनिक दृष्ट | अमूल्य निधि हैि से यह उपयोगी है स्थूल दृष्टि से | देखने वाले कबीर की उलटवाँसियो के मर्म को समझ नहीं पाते हैं | रहस्य भरे पड़े हैं जबकि उनमें धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र के

कबीर के काव्य की शैली

भाषा हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम और शैली अभिव्यक्ति का तौर तरीका होता है संस्कृत साहित्य में शैली के लिए रीति और अंग्रेजी में | कबीर ने जो भी | इसके लिए स्टाइल शब्द का प्रयोग किया जाता है कबीर | कहा है बिना किसी दबाव या बंधन के स्वछन्द ढंग से कहा है की साखियों इस दृष्टि से | पदों में कहीं भी कथा क्रम नहीं मिलता है, कबीर ने अध्यात्म |कबीर संबंधी रचनाएं मुक्तक काव्य शैली की है सी शैलियों का उल्टावाँ ,अन्योक्ति शैली, संबंधी पदों में प्रतीक शैली सामाजिक बुराइयों को लक्ष्य करके जब वे अपनी बात |प्रयोग किया है कहते हैं तब उनकी शैली व्यंग्यात्मक एवं उपदेशात्मक हो जाती है,

अलंकार

भाषा को मधुरभावों को प्रभावशाली और अभिव्यक्ति को सशक्त , कबीर का | बनाने के लिए काव्य में अलंकारों का प्रयोग किया जाता है उन्होंने प्रयत्नपूर्वक अलंकारों | ध्यान सहज भावाभिव्यक्ति पर रहा है का प्रयोग नहीं किया सरल तरीके से लोगों ,अपनी अनुभूति को सहज | काव्य की भाषा हृदय का स्वाभाविक उद्गार है उनके | तक पहुँचाया और उनके साहित्य में प्रयुक्त अलंकार भी भावों का साथ देने के लिए पदों में आए हुए , कबीर की साखियों | सहज ढँग से शामिल हो गए हैं अलंकारवाणी के आभूषण नहीं हैं उनके काव्य में मुख्य रूप से | ,दृष्टांत , अतिशयोक्ति, अन्योक्ति,शपुनरुक्ति प्रका, यमक ,अनुप्रास उत्प्रेक्षा आदि हैं जिनके सहज समावेश से भाषा में , मानवीकरण -प्रभावोत्पादकता में अवश्य वृद्धि हुई है यथा, चारुता संप्रेषणीयता

अनुप्रास अलंकार

कबीर खाई कोट की ,पाणी पीवै न कोई|

जाइ मिलै जब गैंग मै तब सब गंगोदिक होई||

यमक अलंकार

सहज सहज सब कोई कहै ,सहज न चीन्हे कोई|

जिन्ह सहजै विषया तजी ,सहज कहीं जै सोई||

रूपक अलंकार

माया दीपक नर पतंग,भ्रमि-भ्रमि भुवै पड़ंत|

कहै कबीर गुरु ग्यान थै ,एक-आध उबरन्त||

दृष्टांत अलंकार

मूरिष संग न कीजिए ,लोहा जलि न तिराइ |

कदली ,सीप,भुजंग मुष ,एक बूंद तिहु भाइ||

अतिशयोक्ति अलंकार

आँखड़िया झाँई पड़ी पंथ निहारी-निहारी |

जीभड़ियाँ छाला पड़या , राम पुकारि– पुकारि ||

मानवीकरण अलंकार

कबीर माया पापणी ,हरि सूँ करै हराम |

मुखि कढ़ियाली कुमति कि कहण न देई राम ||

छंद

कबीर का साहित्य उनके भावों का सहज उद्गार है कहीं भी | ऐसा नहीं लगता कि उन्होंने काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों को अपनाने का प्रयास किया हो ,पदों में संगीतात्मकता ,इसके बावजूद कबीर की साखियों | | उनके ज्यादातर पद गेय शैली के हैं | नाँद सौंदर्य का गुण विद्यमान है कबीर साह | योजना के गुण मिल जाते हैं -अतः उनमें छंदि्त्य में साखीपदों में चौपाई | रमैनी और पद पढ़ने को मिलते हैं, सबद ,, सवैया, तांटक| कहीं मिल जाते हैं-दंडक छंदों के लक्षण कहीं , कबीर के समय दोहा काल के -देश | चौपाई प्रचलित थे , प्रभाव से कबीर साहित्य में यह बहुतायत में मिलते हैं सोरठ ,साखियों में दोहा |ा छंदों को कबीर ने खूब अपनाया है। रमैनियौ में चौपाई छंद मिलता है इसके | कबीर के सबद ज्यादातर राग रागनियों और पदों में है | बावजूद कबीर के काव्य में छंद विधान किसी चमत्कार प्रदर्शन के लिए नहीं है बल्कि उन्होंने बहु प्रचलित छंदों को सहज ढंग से स्वीकार कियाा है

सारांश

कबीर का काव्य तीक्ष्ण ,तार्किक क्षेत्र में अत्यंत शुष्क | शिल्प बेजोड़ है- और हृदयहीन प्रतीत होने वाले कबीर भक्ति की भावधारा में बहते अपनी निरक्षरता की खुल्लेआम | समय सबसे आगे दिखाई देते हैं प्र ,तब रूपको ;घौषणा करके भी जब वे आवेश में आते हैंतीकों , मानो वे सारे काव्यशास्त्रों में ; अलंकारों की ऐसी झड़ी लगा देते हैं ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व वाले कबीर का काव्य शिल्प काव्य | पारंगत हो | रसिको एवं पाठकों के लिए अनुकरणीय है

शब्द-अर्थ

ब्रह्म -परमात्मा|

जीव- सांसारिक प्राणी ,ब्रह्म का लौकिक अंश|

जगत -संसार ,दुनिया|

पिंड -शरीर|

इड़ा -योगनाड़ी ,रीढ़ या मेरुदंड में बायी ओर पाई जाने वाली नाड़ी|

पिंगला-सूर्य नाड़ी,मेरुदंड में दायी ओर पाई जाने वाली नाड़ी|

सुषुम्ना - इड़ा और पिंगला नाड़ियों के मध्य स्थित नाड़ी | सुषुम्ना में ऊर्जा का प्रवेश होते ही वैराग्य का भाव जाग जाता है|

मूलाधार चक्र -गुह्य-स्थान के समीप|

मानसरोवर- सुन्न में स्थित अमृत कुंड|

संदर्भ सूची

1. कबीर का रहस्यवाद - श्री रामकुमार वर्मा,प्रकाशन-गांधी हिंदी पुस्तक भंडार प्रयाग ,पृष्ठ संख्या -04,50, 56,67
2. कबीर एक अध्ययन -रामरतन भटनागर ,प्रकाशन -किताब महल ,इलाहाबाद | पृष्ठ संख्या-38,52
3. कबीर ग्रंथावली संपादक -बाबू श्यामसुंदर दास, भूमिका पृष्ठ संख्या-02,
4. संत साहित्य –डॉ. प्रेम नारायण शुक्ल प्रकाशन-ग्रन्थम , रामबाग कानपुर पृष्ठ संख्या-358
5. कबीर:हजारीप्रसाद द्विवेदी ,प्रकाशन– राजकमल ,पृष्ठ संख्या-126
6. आदिकाल और भक्तिकाल, संपादक-हेतुभारद्वाज, पृष्ठ संख्या -59
7. संत साहित्य की ऐतिहासिक भूमिका –डॉ. रामविलास शर्मा पृष्ठ संख्या-83
8. मध्यकालीन हिंदी संत :विचार और साधना -डॉ .केशनी प्रसाद चौरसिया|
9. कबीर समग्र अध्ययन -डॉ .योगेश्वर
10. कबीर की भाषा - डॉ .महेंद्र कुमार
11. कबीर मीमांसा -डॉ .रामचंद्र तिवारी
12. कबीर एक नई दृष्टि -डॉ .रघुवंश